

6. विशाल हृदयता

‘क्या यह सच है?’ कवि चक्रवर्ती कंबन के अप्रत्याशित आगमन और प्रश्न से तमिल भाषा के विद्वान् कवि ओट्टुक्कूत्तन चकित हो गये। किसी प्रकार अपने को सँभालकर वे बोले-

मुझ जैसे अकिंचन के घर पर आपके कृपापूर्वक पधारने से यहां का कण-कण पवित्र हो गया। कल फाल्गुण-पूर्णिमा को तमिलनाडु की विद्वन्मण्डली ने भगवान् श्री रङ्ग के मन्दिर में आपके द्वारा रचित रामायण का श्रवण कर जो प्रसन्नता व्यक्त की, वह आप जैसे समर्थ श्री राम-भक्त कवि की गौरवमयी पुण्य प्रशस्ति का अक्षय प्रतीक है।’

भक्तकवि ओट्टुक्कूत्तन के नेत्रों में प्रेमाश्रु उमड़ पड़े। उन्होंने ‘कंब-रामायण’ के रचयिता तमिल-वाल्मीकि महाकवि कंबन का हार्दिक स्वागत किया।

“आप अपनी पवित्र कृति ‘श्री रामायण’ को अग्नि देवता को भेंट कर रहे हैं-इस समाचार ने मुझे कितना विशुद्ध किया है, इसका अनुमान आप कहीं कर पाते।”-इस प्रकार कहते हुए कवि चक्रवर्ती कंबन ने श्री ओट्टुक्कूत्तन के हाथ से उनकी रामायण का शेष अंश, जो अग्नि का ग्रास बनने वाला ही था, बलपूर्वक छीन लिया। वे प्रसन्नता से उछल पड़े और पुनः बोले-“यह अंश मेरी रामायण की पूर्ति का प्रतीक है।”

सम्पूर्ण उत्तराखण्ड अग्निसात् होने से बच गया था। महाकवि कंबन ने उस समय तक केवल छः काण्डों की ही रचना की थी, उत्तरकाण्ड अभी शेष था।

नवीं शताब्दी के महान् कवि ओट्टुक्कूत्तन तमिल साहित्य में माहकवि कंबन के साथ अमर हो गये। दोनों भक्त-कवि कितने विशाल हृदय थे तथा एक-दूसरे के प्रति दोनों में कितना अपनापन-सौहार्द था।

* अभ्यास *

1. कंबन ने ओट्टुक्कूत्तन से बलपूर्वक ग्रंथ क्यों छीना ?
2. कंबन ने किस ग्रंथ की रचना की है ?

